

सलोकु ॥
उसतति करहि अनेक जन
अंतु न पारावार ॥
नानक रचना प्रभि रची
बहु बिधि अनिक प्रकार ॥ 10॥



असटपदी ॥

कई कोटि होए पूजारी ॥

कई कोटि आचार बिउहारी ॥

कई कोटि भए तीरथ वासी ॥

कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥

कई कोटि बेद के स्रोते ॥

कई कोटि तपीसुर होते ॥


कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥

कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥


कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥


नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥





कई कोटि भए अभिमानी ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥
कई कोटि किरपन कठोर ॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई कोटि पर दूखना करहि ॥
कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥







कई कोटि सिध जती जोगी ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥
कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥
कई कोटि देस भू मंडल ॥
कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥
सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै


॥३॥







कई कोटि राजस तामस सातक ॥
कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥
कई कोटि कीए रतन समुद ॥
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥
कई कोटि कीए चिर जीवे ॥
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥
कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥
कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥







कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥
कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
जह जह भाणा तह तह राखे ॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥







कई कोटि भए बैरागी ॥
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
नानक ते जन सदा धनि धनि ॥६॥





कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
कई कोटि अकास ब्रह्मंड ॥
कई कोटि होए अवतार ॥
कई जुगति कीनो बिसथार ॥
कई बार पसरिओ पासार ॥
सदा सदा इकु एकंकार ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
ता का अंतु न जानै कोइ ॥
आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥





कई कोटि पारब्रह्म के दास ॥

तिन होवत आतम परगास ॥

कई कोटि तत के बेते ॥

सदा निहारहि एको नेत्रे ॥

कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥

अमर भए सद सद ही जीवहि ॥

कई कोटि नाम गुन गावहि ॥

आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥

अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥

नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥

